VOL- X | ISSUE- XI | NOVEMBER | 2023 | PEER REVIEW e-JOURNAL | IMPACT FACTOR 7.367 | ISSN 2349-638x

'किसान' कविता के बहाने कृषक जीवन की त्रासदी

डॉ. बालाजी श्रीपती भुरे
प्रोफ़ेसर एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग
शिवजागृति वरिष्ठ महाविद्यालय, नलेगांव
ता. चाकुर जि. लातूर (महाराष्ट्र)

आधुनिक हिंदी साहित्य के इतिहास में भारतीय संस्कृति के अमर गायक तथा मेधावी प्रतिभा के धनी राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त का जन्म उत्तर प्रदेश में झांसी जिले के चिरगांव में 1886 में और निधन 1965 में हुआ। उनके पिता का नाम सेठ रामचरण गुप्त था। वे कनकलता उपनाम से कविता लिखा करते थे। अतः मैथिलीशरण गुप्त को कविता लिखने की प्रेरणा अपने पिता से ही मिली थी।

मैथिलीशरण गुप्त की प्रारंभिक शिक्षा गांव में ही हुई थी। इनका पूरा नाम 'मिथिलाधिपनंदिनीशरण' था। निकट के लोग उन्हें 'दद्दा' नाम से पुकारते थे। महावीर प्रसाद द्विवेदी उनके साहित्यिक माने जाते हैं। मैथिलीशरण गुप्त ने हिंदी कविता के क्षेत्र में खड़ीबोली को परिनिष्ठित एवं परिमार्जित करने का महत्वपूर्ण कार्य किया है। इनकी कविताओं में राष्ट्रप्रेम एवं देशभक्ति की भावना के साथ साथ समाज के विविध क्षेत्र में व्याप्त समस्याओं का चित्रण मिलता है।

भारत भारती, रंग में भंग, जयद्रथ वध, प्लासी का युद्ध, पंचवटी, साकेत और यशोधरा जैसी इनकी चर्चित रचनाएँ हैं । इनमें से 'साकेत' के लिए इन्हें 'मंगला प्रसाद पुरस्कार' मिला। मैथिलीशरण गुप्त राष्ट्रीय चेतना के अग्रदूत माने जाते हैं। देश प्रेम, राष्ट्रभक्ति की भावना, श्रम का मूल्य, भारतीय संस्कृति एवं अतीत का गौरव गान, स्वदेश प्रेम, उपेक्षित स्त्रियों का नायकत्त्व इसके साथ-साथ काव्यात्मकता, गीतात्मकता, नाटकीयता आदि इनके काव्य की प्रमुख विशेषताएं हैं। ' किसान ' मैथिलीशरण गुप्त की एक चर्चित कविता है।

किसान :-

भारत कृषि प्रधान देश है। भारत की अर्थव्यवस्था का मूल आधार कृषि है और कृषि करनेवाला किसान है। किसान अपने मेहनत के बलबूते पर धूपकाल में, शीतकाल में तथा बारिश में दिन-रात मेहनत करता है और अपनी खेती से जो अनाज का उत्पादन करता है उस अनाज से वह स्वयं के परिवार से भी ज्यादा भारतीय समाज के लोगों का भरण-पोषण करने का दायित्व निभाता है। इसीलिए किसान की सेवाभावी वृत्ति या मानवतावादी वृत्ति समाज और राष्ट्र निर्माण के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। लेकिन इतना होने के बावजूद भी किसान को तंगहाली जीवन व्यतीत करना पड़ता है। स्वयं अन्नदाता या निर्माता होकर भी वह सभी सुविधाओं से, सुख-समृद्धि से कोसों दूर है। उसकी आर्थिक तथा सामाजिक वेदना को मैथिलीशरण गुप्त ने इस कविता के माध्यम से प्रस्तुत किया है। इस कविता के माध्यम से भारतीय किसान को समझने के लिए हमें निम्नलिखित बिंदुओं को लेकर सोचना आवश्यक है। जैसे -

मूल संवेदना :-

मैथिलीशरण गुप्त के अनुसार भारतीय किसान शीतकाल, धूपकाल और बारिश के दिनों में भारतीय किसान अपने खेत में मेहनत और कठोर परिश्रम करता है। कठोर मेहनत या परिश्रम के बाद उसके खेत में अच्छी फसल या अनाज उत्पन्न तो होता है लेकिन उसमें

से अधिकतर फसल या अनाज सेठ-साहूकारों का कर्जा चुकाने में चला जाता है। अच्छा अनाज उत्पादन के बावजूद भी उन्हें आर्थिक तंगहाली में जीना पड़ता है। उनकी इसी पीड़ा या व्यथा को कवि ने इस कविता के माध्यम से प्रस्तुत किया है।

साहूकार और महाजनों का कर्जा :-

आर्थिक तंगहाली के कारण भारतीय किसान को अपनी खेती करने के लिए खाद, औषधियां तथा बीज खरीदने के लिए सेठ साहूकारों से कर्जा लेना पडता है। खेती करने के लिए वह कभी भी आत्मनिर्भर नहीं है। उसकी खेती बारिश पर निर्भर होने के कारण कभी अतिवर्षा या बाढ से फसल बर्बाद हो जाती है, तो कभी खेती सूखा या अकाल की चपेट में आ जाती है। अतः उसकी आर्थिक परिस्थिति कभी सुधारती नहीं। बावजूद इसीके भारतीय किसान स्वयं के साथ साथ समाज के लिए, देश के लिए जी तोड़ मेहनत कर फसल उगाता है लेकिन उसे मेहनत का मुआवजा ठीक से नहीं मिलता। अच्छी फसल होने के बावजूद भी किसान को उसका लाभ नहीं मिलता क्योंकि साहूकारों और महाजनों का कर्ज चुकाने में ही उनकी आधे से ज्यादा कमाई चली जाती है। किसान की इसी व्यथा या पीड़ा को अभिव्यक्त करते हुए मैथिलीशरण गुप्त अपनी 'किसान' कविता में लिखते हैं -

" हो जाए अच्छी भी फसल, पर लाभ कृषकों को कहाँ
खाते, खवाई, बीज ऋण से हैं रंगे रक्खे जहाँ
आता महाजन के यहां वह अन्न सारा अंत में
अधपेट खाकर फिर उन्हें है काँपता हेमंत में "1

धूपकाल की पीड़ा :-

किसान धूपकाल में कड़ाके की धूप के होते हुए भी अपनी खेती में काम करते रहता है। धूपकाल में आकाश में सूर्य मानों आग बरसाते रहता है। जिससे भूमि तवे के समान जलने लगती है। परिणामस्वरुप गर्म हवा भी तीव्रता से बहती है जिससे किसान का शरीर पसीना-पसीना हो जाता है। फिर भी किसान अपने कपड़े सुखाकर फिर धूप में श्रम करने के लिए निकल पड़ता है। इस कठोर परिश्रम के पीछे किसान का कौन सा लोभ छिपा है यह कवि को समझ में नहीं आता। कवि किसान की धूपकाल में खेत की मेहनत करते समय होता हुआ कष्ट तथा वेदना को बयान करते हुए कहता है -

" बरस रहा है रवि अनल, भूतल तवा सा जल रहा
है बह रहा सन सन पवन, तन से पसीना बह रहा
देखो कृषक शोषित,सुखाकर हल तथापि चला रहे
किस लोभ से इस आँच में, वे निज शरीर जला रहे "2

बारिश के दिन की पीड़ा :-

घनगोर वर्षा में तथा बादलों के गर्जन में कौन अपने घर से बाहर निकलना चाहता है। लेकिन किसान बारिश की परवाह किए बिना, घर में बिना रुके, बिना थके अपने खेत में काम करते रहता है। उसके लिए घर में रुकना अपने ही जीवन को रोकने के समान है। बारिश में भी खेत में काम करने की किसान की विवशता और उसके मन की पीडा एवं वेदना का वर्णन करते हुए कवि कहता है -

" घनघोर वर्षा हो रही, है गगन गर्जन कर रहा
घर से निकलने को गरजकर, वज्र वर्जन कर रहा
तो भी कृषक मैदान में करते निरंतर काम हैं
किस लोभ से वे आज भी, लेते नहीं विश्राम हैं "3

अर्थात बाहर घनघोर वर्षा हो रही है, बादल गरज रहे हैं। ऐसे में घर बाहर से वज्र भी निकलना नहीं चाहता। लेकिन किसान खेती के मैदान में काम करने के लिए निकल पड़ता है। यहाँ वेदना के साथ साथ उसकी कर्मशील तथा श्रमशील वृत्ति स्पष्ट हो जाती है।

शीतकालीन वेदना :-

शीतकाल में कड़ाके की ठंड होती है। ऐसे समय बाहर निकलना मृत्यु को स्वीकारने के समान होता है। यहां किसान को अंधेरी रात में भी कड़ाके की ठंड में खेती के तरफ निकलना पड़ता है, भले ही अपना शरीर ठंड से थरथराये। लेकिन अपनी खेती की रक्षा के लिए अर्थात पशुओं द्वारा या अन्य किसी की वजह से अपनी फसल नष्ट न हो जाए। इसीलिए वह इंधन जलाकर रातभर जागते रहता है। कवि के मन में प्रश्न उठता है कि

ऐसा कौनसा लोभ है, जो शीतकाल में भी उसे इतना कठोर परिश्रम करने के लिए विवश करता है। किसान की इसी श्रमशीलता को व्यक्त करते हुए मैथिलीशरण गुप्त कहते हैं -

"बाहर निकलना मौत है, आधी अँधेरी रात है
है शीत कैसा पड़ रहा, औ थरथराट गात है
तो भी कृषक इंधन जलाकर, खेत पर है जागते
यह लाभ कैसा है, न जिसका मोह अब भी त्यागते "4

किसानों की अपनी अलग दुनिया :-

मैथिलीशरण गुप्त कहते हैं कि धूप में, बारिश में या शीतकाल में किसान रात दिन अपने लिए, समाज के लिए तथा राष्ट्र के लिए अपने खेत में मेहनत करता है। उसे वर्तमान में अपने आसपास क्या चल रहा है या क्या हो रहा है अर्थात राजनीति कैसे चल रही है, आर्थिक विकास कैसा है या देश कैसी उन्नति कर रहा है इसका तनिक भी पता नहीं रहता। उसकी अपनी एक अलग दुनिया लगती है और वह दुनिया है उसकी खेती, उसी दुनिया में वह हमेशा खोया हुआ रहता है। उसकी इसी मानसिकता को लेकर कवि कहता है -

" संप्रति कहाँ क्या हो रहा है, कुछ उसको ज्ञान है
है वायु कैसी चल रही, इसका न कुछ भी ध्यान है
मानो भुवन से भिन्न उनका, दूसरा ही लोक है
शशि सूर्य हैं फिर भी कहीं, उनमें नहीं आलोक है।"5

निष्कर्ष :-

इस प्रकार किसान इस कविता में मैथिलीशरण गुप्त ने किसानों की वेदना, परिश्रमशील वृत्ति, खेत के प्रति निष्ठा तथा ईमानदारी के साथ-साथ उसकी मानवतावादी एवं उदारवादी दृष्टि को भी व्यक्त किया है। वह कड़ाके की धूप में, घनघोर बारिश में या शरीर को थरथरानेवाली ठंड में भी अपने प्राणों की परवाह किए बिना अपने खेत में परिश्रम करते रहता है ताकि अधिक से अधिक फसल उग सके। इस कविता के माध्यम से किसान के जीवन को लेकल कुछ निष्कर्ष बिंदु हमारे सामने आते हैं। जैसे -

- किसान बारिश में, शीतकाल में तथा धूप काल में बिना थके दिन-रात मेहनत करता है।
- किसान स्वयं तथा अपने परिवार के साथ साथ समाज तथा राष्ट्र के भरण-पोषण के लिए भी मेहनत करता है।
- किसान की मेहनत के पीछे उदारवादी तथा मानवतावादी दृष्टि दिखाई देती है।
- किसान की कडी मेहनत के बावजूद भी गर खेत में अच्छी फसल आती भी है, तो वह सेठ-साहूकारों तथा महाजनों का कर्ज चुकाने में ही चली जाती है।
- किसान अन्नदाता होकर भी भूखा रहता है और उसे आर्थिक तंगहाली में जीना पड़ता है, यह किसान जीवन की त्रासदी एवं विडंबना है।

कुल मिलाकर किसान स्वयं कड़ी मेहनत, परिश्रम करने के बावजूद भी उसे आर्थिक तंगहाली से जीना पड़ रहा है। अन्नदाता होकर भी वह सभी सुविधाओं से, सुख-समृद्धि से कोसों दूर है। अतः ऐसे अन्नदाता, मेहनती किसान के सुखमय जीवन जीने के लिए सरकार को नदियों को आपस में जोड़कर खेती के लिए जल की व्यवस्था करनी होगी, साथ ही साथ खाद, बीज तथा विकसित संसाधनों को किसानों तक पहुँचाना होगा और उनके द्वारा उत्पादित अनाज को सही मुआवजा देना होगा कई सुविधाओं को लाना होगा ताकि उसकी अच्छी जिंदगी बने।

संदर्भ सूची :-

1) संपा.डॉ. बालाजी भुरे, डॉ.व्यंकट पाटिल - काव्य तरंग - पृ.82
2) संपा.डॉ. बालाजी भुरे, डॉ.व्यंकट पाटिल - काव्य तरंग - पृ.82
3) संपा.डॉ. बालाजी भुरे, डॉ.व्यंकट पाटिल - काव्य तरंग - पृ.82
4) संपा.डॉ. बालाजी भुरे, डॉ.व्यंकट पाटिल - काव्य तरंग - पृ.82
5) संपा.डॉ. बालाजी भुरे, डॉ.व्यंकट पाटिल - काव्य तरंग - पृ.82